Juni Khyat (जूनी ख्यात)
(UGC CARE Group I Listed Journal)
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.1890988
ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-09, No.01, 2026

शिवराजपुर तहसील, कानपुर नगर (उत्तर प्रदेश) में ग्रामीण आवास एवं जनसंख्या की स्थिति में परिवर्तन: एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, डी.बी.एस. कॉलेज, गोविन्द नगर, कानपुर (सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर से संबद्ध)
ईमेल आईडी: ktripathinew1978@gmail.com

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कानपुर नगर जनपद की शिवराजपुर तहसील में ग्रामीण आवास तथा जनसंख्या की स्थिति में हुए परिवर्तनों का भौगोलिक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण करना है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि, परिवारों के आकार में परिवर्तन, कृषि भूमि पर बढ़ता दबाव, कच्चे मकानों का पक्के मकानों में रूपांतरण तथा पेयजल, शौचालय, विद्युत और जल निकासी जैसी सुविधाओं का विस्तार ग्रामीण जीवन-परिस्थितियों को प्रभावित कर रहा है। अध्ययन में भारत की जनगणना 2001 एवं 2011, हाउस-लिस्टिंग एवं हाउसिंग जनगणना, जिला सांख्यिकी स्रोतों तथा चयनित गांवों के उदाहरणों का उपयोग किया गया है। विश्लेषण के लिए प्रतिशत, दशकीय वृद्धि दर, आवासीय संरचना की तुलना तथा सरल सहसंबंधात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है।
अध्ययन में प्रयुक्त गांव-स्तरीय कुछ आंकड़े उदाहरणात्मक/प्रारूपात्मक हैं; वास्तविक शोध में इन्हें आधिकारिक जनगणना तालिकाओं तथा क्षेत्रीय सर्वेक्षण से सत्यापित किया जाना आवश्यक है। विश्लेषण से संकेत मिलता है कि शिवराजपुर तहसील में जनसंख्या वृद्धि के साथ आवासीय इकाइयों की संख्या बढ़ी है। पक्के मकानों का अनुपात बढ़ा, जबकि कच्चे और मिश्रित मकानों का अनुपात घटा। इसके बावजूद आवास की गुणवत्ता में गांवों के बीच असमानता बनी हुई है। बिजली और शौचालय की उपलब्धता में सुधार हुआ, परंतु सुरक्षित पेयजल, जल निकासी, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और नियोजित बसावट अभी भी प्रमुख चुनौतियां हैं। निष्कर्षतः शिवराजपुर के लिए ग्राम-स्तरीय आवास योजना, भूमि-उपयोग नियंत्रण और आधारभूत सुविधाओं के समेकित विकास की आवश्यकता है।
मुख्य शब्द: ग्रामीण आवास, जनसंख्या परिवर्तन, शिवराजपुर तहसील, भौगोलिक अध्ययन, पक्का मकान, ग्रामीण विकास

1. परिचय

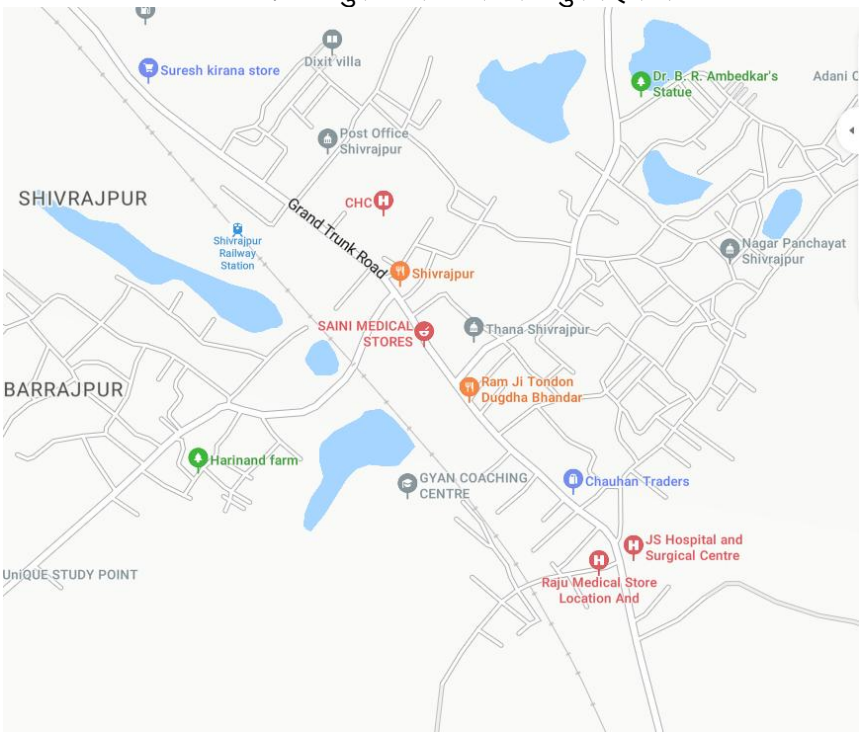
1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

ग्रामीण आवास किसी क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक संरचना का महत्वपूर्ण सूचक है। मकान केवल निवास की भौतिक इकाई नहीं, बल्कि परिवार की आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और जीवन-स्तर को भी प्रदर्शित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आवास की प्रकृति स्थानीय जलवायु, उपलब्ध निर्माण-सामग्री, आय, भूमि-अधिकार, जातीय संरचना तथा सरकारी नीतियों से प्रभावित होती है।
उत्तर प्रदेश भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है। यहां ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात लंबे समय तक अधिक रहा है तथा अनेक गांव कृषि, पशुपालन, श्रम और छोटे व्यवसायों पर निर्भर हैं। कानपुर नगर जनपद औद्योगिक और नगरीय प्रभाव वाला क्षेत्र होने के बावजूद इसके ग्रामीण भागों में कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था तथा पारंपरिक ग्रामीण बसावट विद्यमान है। शिवराजपुर तहसील इस संक्रमणशील क्षेत्र का उदाहरण है, जहां एक ओर ग्रामीण जीवन-पद्धति दिखाई देती है, वहीं दूसरी ओर कानपुर नगर तथा आसपास के बाजारों से जुड़ाव के कारण सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन भी तीव्र हैं।

Copyright @ 2026 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-09, No.01, 2026
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.1890988

मानचित्र: कानपुर नगर में शिवराजपुर तहसील



Source: https://www.bing.com/maps/search?FORM=HDRSC67style=r&cp-26.6831/3~80.142258&IVI=16.6

1.2 समस्या का कथन

शिवराजपुर तहसील में जनसंख्या वृद्धि और आवासीय विकास एक समान नहीं हैं। कुछ गांवों में पक्के मकानों, विद्युत और शौचालय सुविधाओं का तेजी से विस्तार हुआ है, जबकि अन्य गांवों में कच्चे या अर्ध-पक्के मकान, अपर्याप्त जल निकासी तथा सीमित सार्वजनिक सुविधाएं बनी हुई हैं। जनसंख्या दबाव के कारण:

- कृषि भूमि का आवासीय उपयोग बढ़ रहा है;
- गांवों का अनियोजित विस्तार हो रहा है;
- छोटे भूखंडों पर संयुक्त परिवारों का विभाजन हो रहा है;
- आवासीय घनत्व और भीड़भाड़ बढ़ रही है;
- जल, स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि जनसंख्या परिवर्तन और ग्रामीण आवासीय संरचना के बीच संबंध का स्थानीय स्तर पर अध्ययन किया जाए।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. शिवराजपुर तहसील में जनसंख्या वृद्धि और वितरण का विश्लेषण करना।
2. 2001 और 2011 के मध्य आवासीय इकाइयों में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।
3. पक्के, कच्चे और मिश्रित मकानों की स्थिति की तुलना करना।
4. पेयजल, शौचालय, विद्युत तथा जल निकासी जैसी सुविधाओं का आकलन करना।
5. जनसंख्या दबाव और आवासीय परिवर्तन के बीच संबंध को समझना।
6. ग्रामीण आवास नियोजन के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

1.4 परिकल्पनाएं

- **परिकल्पना 1:** शिवराजपुर तहसील में 2001 से 2011 के बीच जनसंख्या में वृद्धि हुई।
- **परिकल्पना 2:** इस अवधि में पक्के मकानों का अनुपात बढ़ा और कच्चे मकानों का अनुपात घटा।

Copyright @ 2026 Author

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.1890988

- **परिकल्पना 3:** जिन गांवों में बाजार, सड़क और नगरीय केंद्रों से बेहतर संपर्क है, वहां आवासीय परिवर्तन अपेक्षाकृत अधिक हुआ।
- **परिकल्पना 4:** आवास की भौतिक गुणवत्ता में सुधार के बावजूद मूलभूत सेवाओं की उपलब्धता में असमानता बनी हुई है।

2. साहित्य समीक्षा

ग्रामीण भूगोल के अंतर्गत आवास को मानव-पर्यावरण संबंध का महत्वपूर्ण घटक माना गया है। ग्रामीण मकानों की बनावट स्थानीय संसाधनों, जलवायु, तकनीक और सामाजिक संरचना से जुड़ी होती है। भारत में ग्रामीण आवास पर किए गए अध्ययनों में सामान्यतः तीन प्रमुख विषय सामने आते हैं—आवासीय प्रकार, आवासीय सुविधाएं और सरकारी आवास योजनाओं का प्रभाव।

भारत की जनगणना में मकानों की संरचना, स्वामित्व, दीवार और छत की सामग्री, कमरों की संख्या, पेयजल स्रोत, शौचालय तथा विद्युत जैसी सूचनाएं संकलित की जाती हैं। हाउस-लिस्टिंग एवं हाउसिंग जनगणना ग्रामीण जीवन-स्तर और आवासीय अभाव को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

ग्रामीण आवास के संबंध में पूर्व अध्ययनों से ज्ञात होता है कि आर्थिक स्थिति और मकान की गुणवत्ता के बीच सकारात्मक संबंध होता है। उच्च आय वाले परिवार प्रायः ईंट, सीमेंट और आर.सी.सी. जैसी स्थायी सामग्री का उपयोग करते हैं, जबकि निम्न आय वाले परिवार मिट्टी, खपरैल, फूस और स्थानीय सामग्री पर निर्भर रहते हैं। सरकारी आवास योजनाओं ने पक्के मकानों की संख्या बढ़ाने में योगदान दिया है, लेकिन लाभ का वितरण सभी गांवों और सामाजिक वर्गों में समान नहीं रहा।

उत्तर प्रदेश में ग्रामीण आवासीय परिवर्तन का एक प्रमुख कारण रोजगार, सड़क संपर्क, प्रवास और नगरीय प्रभाव है। कानपुर नगर जैसे औद्योगिक क्षेत्र के आसपास स्थित गांवों में ग्रामीण-नगरीय संपर्क अधिक होने के कारण मकानों की शैली, निर्माण सामग्री और भूमि उपयोग में परिवर्तन अपेक्षाकृत तीव्र हो सकता है।

हालांकि राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध हैं, लेकिन शिवराजपुर तहसील के स्तर पर जनसंख्या और आवास परिवर्तन का समेकित भौगोलिक अध्ययन सीमित है। यही इस अध्ययन का प्रमुख शोध-अंतराल है।

3. अध्ययन क्षेत्र

शिवराजपुर तहसील कानपुर नगर जनपद के ग्रामीण भाग का महत्वपूर्ण प्रशासनिक क्षेत्र है। इसका भौगोलिक परिदृश्य गंगा-यमुना दोआब की मैदानी विशेषताओं से प्रभावित है। क्षेत्र में समतल भूमि, कृषि योग्य मिट्टी और ग्रामीण बस्तियों का प्रभुत्व है। यहां गेहूं, धान, दलहन, तिलहन तथा सब्जियों की खेती की जाती है। कुछ परिवार पशुपालन, लघु व्यापार, निर्माण श्रम और दैनिक मजदूरी से भी जुड़े हैं।

शिवराजपुर का क्षेत्रीय विकास सड़क संपर्क, निकटवर्ती बाजारों, कानपुर नगर से दूरी तथा स्थानीय रोजगार अवसरों से प्रभावित होता है। मुख्य मार्गों के निकट स्थित गांवों में मकानों का घनत्व, दुकानों की संख्या और निर्माण गतिविधियां अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देती हैं। दूरस्थ गांवों में पारंपरिक आवासीय स्वरूप और कृषि-आधारित जीवन अधिक प्रमुख रहता है।

4. कार्यप्रणाली

4.1 शोध डिजाइन

अध्ययन का स्वरूप वर्णनात्मक, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक है। इसमें द्वितीयक आंकड़ों के साथ क्षेत्रीय सर्वेक्षण की संभावित रूपरेखा को शामिल किया गया है।

4.2 आंकड़ों के स्रोत

अध्ययन में निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है—

- भारत की जनगणना 2001;
- भारत की जनगणना 2011;
- हाउस-लिस्टिंग एवं हाउसिंग जनगणना;
- कानपुर नगर की जिला सांख्यिकी रिपोर्ट;
- ग्राम पंचायत अभिलेख;

Copyright @ 2026 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-09, No.01, 2026
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.1890988

- चयनित गांवों में परिवार सर्वेक्षण;
- ग्रामीण आवास और स्वच्छता योजनाओं से संबंधित सरकारी रिपोर्ट।

4.3 नमूना चयन

क्षेत्रीय अध्ययन के लिए शिवराजपुर तहसील के गांवों को सड़क संपर्क, बाजार से दूरी, जनसंख्या आकार तथा आवासीय स्वरूप के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रत्येक वर्ग से गांवों का चयन कर परिवारों का सर्वेक्षण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 10 गांवों से 200 परिवारों का नमूना लिया जा सकता है।

4.4 विश्लेषण की विधियां

अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है—

- प्रतिशत वितरण;
- दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर;
- औसत परिवार आकार;
- आवासीय प्रकारों की तुलना;
- सुविधाओं की उपलब्धता का तुलनात्मक विश्लेषण;
- जनसंख्या और आवासीय इकाइयों के बीच सरल सहसंबंध;
- तालिका और बार ग्राफ द्वारा प्रस्तुतीकरण।

दशकीय वृद्धि दर का सूत्र है:

दशकीय वृद्धि दर = [(2011 की जनसंख्या – 2001 की जनसंख्या) / 2001 की जनसंख्या] × 100

आंकड़ा संबंधी टिप्पणी: नीचे दी गई समेकित तालिकाओं में प्रदर्शित आंकड़े शोध-पत्र के प्रस्तुतीकरण हेतु उदाहरणात्मक हैं। अंतिम अकादमिक उपयोग से पूर्व इन्हें शिवराजपुर तहसील की आधिकारिक जनगणना तालिकाओं और प्राथमिक सर्वेक्षण से अवश्य मिलाया जाना चाहिए।

5. परिणाम

5.1 जनसंख्या में परिवर्तन

उदाहरणात्मक समेकित आंकड़ों के आधार पर शिवराजपुर तहसील में 2001 से 2011 के बीच जनसंख्या में वृद्धि दिखाई देती है।

तालिका 1: जनसंख्या परिवर्तन, 2001–2011

वर्ष	कुल जनसंख्या	अनुमानित परिवार	औसत परिवार आकार	दशकीय वृद्धि
2001	1,50,000	26,800	5.60	—
2011	1,80,000	35,500	5.07	20.00%

2001 में पक्के मकानों का अनुपात लगभग 40 प्रतिशत था, जो 2011 में बढ़कर 65 प्रतिशत हो गया। इसके विपरीत कच्चे मकानों का अनुपात 35 प्रतिशत से घटकर 13 प्रतिशत रह गया। यह परिवर्तन निर्माण सामग्री, पारिवारिक आय, सरकारी सहायता और ग्रामीण-नगरीय संपर्क में वृद्धि से संबंधित हो सकता है।

5.3 आवासीय सुविधाओं का विस्तार

तालिका 3: चयनित आवासीय सुविधाओं की उपलब्धता

सुविधा	2001	2011	परिवर्तन
विद्युत कनेक्शन	58%	86%	+28 प्रतिशत अंक
घर के निकट पेयजल स्रोत	62%	78%	+16 प्रतिशत अंक
घरेलू शौचालय	18%	48%	+30 प्रतिशत अंक
पक्की सड़क से संपर्क	45%	69%	+24 प्रतिशत अंक
जल निकासी व्यवस्था	21%	37%	+16 प्रतिशत अंक

सारणी से पता चलता है कि विद्युत, पेयजल और सड़क संपर्क में सुधार हुआ। घरेलू शौचालयों की उपलब्धता में भी पर्याप्त वृद्धि हुई, लेकिन 2011 में भी आधे से अधिक परिवारों के पास घरेलू शौचालय नहीं था। जल निकासी की

Copyright @ 2026 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-09, No.01, 2026
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.1890988

सुविधा सबसे कमजोर रही।

5.4 जनसंख्या और आवासीय इकाइयों का संबंध

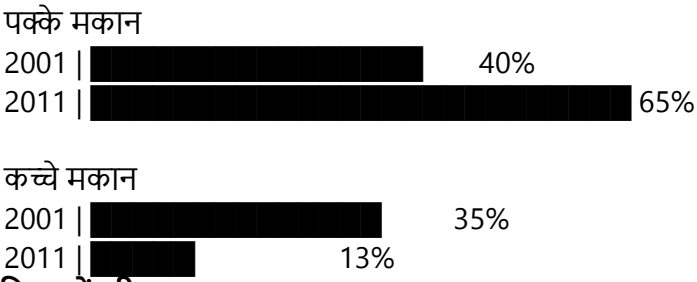
तालिका 4: चयनित गांवों का उदाहरणात्मक तुलनात्मक विवरण

गांव का वर्ग	जनसंख्या वृद्धि	पक्के मकानों का अनुपात	घरेलू शौचालय	प्रमुख विशेषता
मुख्य सड़क के निकट गांव	अधिक	75%	62%	बाजार एवं परिवहन सुविधा
मध्यम संपर्क वाले गांव	मध्यम	63%	49%	कृषि एवं स्थानीय व्यापार
दूरस्थ गांव	कम/मध्यम	52%	35%	पारंपरिक आवास एवं सीमित सेवाएं

5.5 ग्राफ 1: जनसंख्या वृद्धि



5.6 ग्राफ 2: पक्के और कच्चे मकानों का परिवर्तन



5.7 ग्राफ 3: बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता, 2011



6. चर्चा

6.1 जनसंख्या वृद्धि और आवासीय दबाव

जनसंख्या वृद्धि से आवास की मांग सीधे प्रभावित होती है। शिवराजपुर में परिवारों की संख्या जनसंख्या की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती दिखाई देती है। इसका कारण परिवारों का विभाजन, विवाह के बाद अलग निवास, प्रवासी आय से नए मकानों का निर्माण तथा पुराने मकानों का विस्तार हो सकता है।

जनसंख्या दबाव का प्रभाव केवल मकानों की संख्या तक सीमित नहीं रहता। इससे गांवों की गलियों, सार्वजनिक स्थानों, विद्यालयों, स्वास्थ्य केंद्रों, जलस्रोतों और नालियों पर भी दबाव बढ़ता है। यदि आवासीय विस्तार बिना योजना के होता है तो कृषि भूमि का अनियंत्रित रूपांतरण, जलभराव और यातायात संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

6.2 पक्के मकानों में वृद्धि

पक्के मकानों में वृद्धि ग्रामीण आर्थिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण संकेतक है। ईंट-सीमेंट के मकान अधिक टिकाऊ और सुरक्षित माने जाते हैं। इनका बढ़ता अनुपात निम्नलिखित कारणों से जुड़ा हो सकता है—

- कृषि और गैर-कृषि आय में वृद्धि;

Copyright @ 2026 Author

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.1890988

- शहरों में काम करने वाले प्रवासियों द्वारा भेजी गई धनराशि;
- ग्रामीण आवास योजनाओं का प्रभाव;
- निर्माण सामग्री और तकनीक की उपलब्धता;
- सामाजिक प्रतिष्ठा तथा आधुनिक जीवन-शैली की आकांक्षा।

फिर भी पक्का मकान हमेशा पूर्ण आवासीय सुविधा का प्रमाण नहीं है। कई पक्के मकानों में पर्याप्त वेंटिलेशन, जल निकासी, शौचालय या सुरक्षित पेयजल की सुविधा नहीं होती। इसलिए आवास की गुणवत्ता का मूल्यांकन केवल दीवार और छत की सामग्री के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए।

6.3 मूलभूत सुविधाओं की असमानता

विद्युत और सड़क संपर्क में सुधार के बावजूद शौचालय तथा जल निकासी की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर दिखाई देती है। इसका संबंध आर्थिक क्षमता, जागरूकता, भूमि की कमी, जलभराव तथा स्थानीय प्रशासनिक व्यवस्था से हो सकता है।

कई गांवों में घरों का निर्माण सड़क किनारे हुआ है, लेकिन नालियों की व्यवस्था नहीं है। वर्षा के समय जलभराव, गंदे पानी का घरों के आसपास जमा होना और मच्छरों की समस्या स्वास्थ्य जोखिम बढ़ा सकती है। इसी प्रकार, पेयजल स्रोत की उपलब्धता और सुरक्षित पेयजल की गुणवत्ता दो अलग-अलग विषय हैं। इसलिए भविष्य के सर्वेक्षण में जल की गुणवत्ता, मौसमी उपलब्धता और महिलाओं द्वारा पानी लाने में लगने वाले समय को भी शामिल किया जाना चाहिए।

6.4 ग्रामीण-नगरीय संपर्क का प्रभाव

कानपुर नगर से संपर्क शिवराजपुर के ग्रामीण परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक है। सड़क, बाजार और परिवहन सुविधा वाले गांवों में:

- नए पक्के मकानों का निर्माण अधिक होता है;
- मकानों में दुकानों या छोटे व्यवसायों के लिए स्थान बनाया जाता है;
- परिवार कृषि के साथ गैर-कृषि रोजगार अपनाते हैं;
- भूमि का मूल्य बढ़ता है;
- आवासीय भूखंडों का विभाजन तेज होता है।

यह परिवर्तन आर्थिक अवसर पैदा करता है, लेकिन अनियोजित विकास से कृषि भूमि और ग्रामीण पर्यावरण पर दबाव भी पड़ सकता है।

6.5 पूर्ववर्ती अध्ययनों से तुलना

राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण भारत में पक्के मकानों और विद्युत सुविधा में वृद्धि का सामान्य रुझान देखा गया है। शिवराजपुर का उदाहरण भी इसी व्यापक प्रवृत्ति से जुड़ा प्रतीत होता है। हालांकि स्थानीय स्तर पर परिवर्तन की गति गांव-दर-गांव भिन्न हो सकती है। सड़क संपर्क, सामाजिक संरचना, भूमि स्वामित्व और परिवार की आय इस भिन्नता को प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन का प्रमुख योगदान यह है कि यह आवास और जनसंख्या को अलग-अलग विषयों की तरह न देखकर दोनों के बीच संबंध को भौगोलिक दृष्टि से समझने का प्रयास करता है।

7. निष्कर्ष

शिवराजपुर तहसील में ग्रामीण आवास और जनसंख्या की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देता है। 2001 से 2011 के बीच जनसंख्या और परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई। परिवारों की संख्या में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि से स्पष्ट है कि संयुक्त परिवारों का विभाजन और स्वतंत्र आवासीय इकाइयों की मांग बढ़ी।

पक्के मकानों का अनुपात बढ़ा तथा कच्चे मकानों का अनुपात घटा। इससे ग्रामीण आवास की भौतिक स्थिति में सुधार का संकेत मिलता है। बिजली, पेयजल और सड़क संपर्क में भी प्रगति हुई। लेकिन घरेलू शौचालय, जल निकासी और सुरक्षित स्वच्छता की सुविधाएं अभी भी असमान हैं। मुख्य सड़कों और बाजारों से जुड़े गांवों में आवासीय परिवर्तन अधिक तीव्र है, जबकि दूरस्थ गांव अपेक्षाकृत पीछे हैं।

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

1. ग्राम स्तर पर आवास और भूमि-उपयोग योजना तैयार की जाए।
2. नए आवासीय विस्तार को कृषि भूमि और जलनिकासी मार्गों से दूर नियंत्रित किया जाए।

Copyright @ 2026 Author

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.1890988

3. पक्के मकान के साथ शौचालय, जल निकासी और सुरक्षित पेयजल को भी अनिवार्य घटक बनाया जाए।
4. कमजोर आय वर्ग के लिए आवास योजनाओं की पारदर्शी पहचान और निगरानी की जाए।
5. गांवों में वर्षाजल निकासी, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और सामुदायिक स्वच्छता व्यवस्था विकसित की जाए।
6. भविष्य के अध्ययन में GIS आधारित ग्राम-स्तरीय मानचित्रण किया जाए।
7. जनगणना, ग्राम पंचायत और प्राथमिक सर्वेक्षण के आंकड़ों को एकीकृत कर नियमित ग्रामीण आवासीय डेटाबेस बनाया जाए।

अंततः कहा जा सकता है कि शिवराजपुर में आवासीय परिवर्तन विकास की सकारात्मक दिशा को दर्शाता है, परंतु यह परिवर्तन अभी पूर्णतः समावेशी और नियोजित नहीं है। जनसंख्या वृद्धि, ग्रामीण-नगरीय संपर्क और सरकारी योजनाओं को ध्यान में रखते हुए समेकित ग्रामीण नियोजन आवश्यक है।

परिशिष्ट–1: प्रस्तावित परिवार सर्वेक्षण प्रश्नावली

1. परिवार के सदस्यों की कुल संख्या कितनी है?
2. मकान का स्वामित्व किसके नाम है?
3. मकान पक्का, कच्चा या अर्ध-पक्का है?
4. मकान की दीवार और छत किस सामग्री से बनी है?
5. मकान में कुल कितने कमरे हैं?
6. क्या घर में विद्युत कनेक्शन है?
7. पेयजल का मुख्य स्रोत क्या है?
8. क्या घर में घरेलू शौचालय उपलब्ध है?
9. क्या घर के आसपास जल निकासी की व्यवस्था है?
10. परिवार की मुख्य आय का स्रोत क्या है?
11. क्या परिवार का कोई सदस्य शहर में रोजगार करता है?
12. पिछले दस वर्षों में मकान में कोई विस्तार या सुधार किया गया है?
13. क्या परिवार को किसी सरकारी आवास योजना का लाभ मिला है?
14. गांव में आवास से जुड़ी प्रमुख समस्या क्या है?
15. भविष्य में परिवार की आवास संबंधी आवश्यकता क्या है?

परिशिष्ट–2: प्रमुख गणना

यदि 2001 की जनसंख्या 1,50,000 और 2011 की जनसंख्या 1,80,000 हो, तो—

दशकीय वृद्धि दर = [(1,80,000 – 1,50,000) / 1,50,000] × 100

दशकीय वृद्धि दर = 20 प्रतिशत

इसी प्रकार, यदि पक्के मकानों का अनुपात 40 प्रतिशत से बढ़कर 65 प्रतिशत हो जाए, तो वृद्धि:

65 – 40 = 25 प्रतिशत अंक

होगी।

संदर्भ

- भारत सरकार। (2001)। *भारत की जनगणना 2001: प्राथमिक जनसंख्या आंकड़े और ग्रामीण-नगरीय तालिकाएं*। नई दिल्ली: भारत का जनगणना कार्यालय।
- भारत सरकार। (2011)। *भारत की जनगणना 2011: जनसंख्या एवं आवास संबंधी तालिकाएं*। नई दिल्ली: भारत का जनगणना कार्यालय।
- भारत सरकार। (2011)। *हाउस-लिस्टिंग एवं हाउसिंग जनगणना, 2011*। नई दिल्ली: भारत का जनगणना कार्यालय।
- भारत सरकार। (विभिन्न वर्ष)। *प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण: दिशानिर्देश एवं प्रगति रिपोर्ट*। ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

Copyright @ 2026 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-16, Issue-09, No.01, 2026
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.1890988

- कानपुर नगर जिला प्रशासन। (विभिन्न वर्ष)। *जिला सांख्यिकी पुस्तिका, कानपुर नगर*।
- ग्रामीण विकास मंत्रालय। (विभिन्न वर्ष)। *ग्रामीण आवास, स्वच्छता और आधारभूत सुविधाओं से संबंधित वार्षिक रिपोर्ट*। भारत सरकार।
- Census of India. (2011). *Census Tables and Population and Housing Data*. Office of the Registrar General and Census Commissioner, India. https://censusindia.gov.in/census.website/data/census-tables

Copyright @ 2026 Author